स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड

¯Öß<“Ö.>ü. (ØÆü¤ü) ^¯ÖÖ×¬Ö ÆüŸÖ ¯ÖÃŸÖŸÖ

शोध प्रबंध की रूपरेखा

:: अध्ययन विषय ::

''समकालीन हिंदी महिला कहानिकारों की कहानियों में कामकाजी नारी ''

:: ¿ÖÖ¬Ö–”üÖ¡ÖÖ ::

भताने जयश्री आत्माराम

(<´Ö.<.,²Öß. <>ü., <´Ö.×±ú»Ö)

:: शोध निर्देशक ::

डॉ. हणमंत पवार

(<´Ö.<., ²Öß.<>ü., ÃÖ™ü, ¯Öß<“Ö.>ü.)

अध्यक्ष, हिंदी विभाग,

शहीद भगतसिंग महाविद्यालय, किल्लारी.

जून- २०१७

"समकालीन हिंदी महिला कहानिकारों की कहानियों में कामकाजी नारी"

मानव जीवन में नर-नारी का अन्योन्याश्रित संबंध है| स्त्री-पुरूष के बिना यह संसार अधूरा है| विशेषतः नारी को जगत की जननी कहा जाता है | हमारे समाज में स्त्री को एक ओर देवता के रूप में सम्मान दिया जाता है वही दूसरी ओर उसकी उपेक्षा भी की जाती है | आज नारी ने समाज में अपना स्थान बनाया हैं किंतु समकालीन जीवन में भी स्त्री स्वतंत्र और मुक्त नहीं है | स्त्री भी एक मनुष्य है यह समझा ही नही जा रहा है | स्त्री के शरीर के परे जाकर उसकी ओर देखा ही नहीं जा रहा है | परिणामतः आज भी नारी हिंसा और शोषण का शिकार बन रही है | विधवापन, वेश्यावृत्ती, दहेज हत्या, भ्रूण हत्या, यौन उत्पीडन, तलाक, परित्याग आदि समस्याओं का सामना आज की स्त्री कर रहीं हैं |

सृष्टि के विकास क्रम में पुरूष के समान नारी का स्थान महत्त्वपूर्ण रहाँ हैं| नारी को पुरूष की अर्धांगिनी तथा सहधर्मिणी स्वीकार किया गया है | वहाँ वह पुरूष के जीवन में एक आवश्यक अंग माना गया था | वह पुरूष से हीन नहीं थी, वह एक मात्र भोग्या भी नहीं थी, वह पुरूष की पूरक थी | भारतीय जीवन पद्धति की समग्र गरिमा आधार भी परिवार है| नारी इस परिवार की संचालिका है| परिवार की सार्थकता नारी के बिना संदिग्ध है| वह जननी, जाया जीवन संगिनी हैं |

टॉमस मूर का मत है कि "नारी रात का तारा और प्रभात का हीरा है| वह तो ओस का कण है जिसमें काँटो का मुँह भी हिरों से भर जाता है | वैदिक वाङमय में कहा गया है कि नारी ही घर हैं" | नारी के बिना घर नही हैं | "ऐतरेय ब्राम्हण में नारी को सखा के पद पर प्रतिष्ठित करके उसकी महिमा पुरूष के समकक्ष स्वीकार की गई हैं | शतपथ ब्राम्हण में जीवन के हर क्षेत्र में नारी और पुरूष का समकक्षता का आख्यान करते हुए कहाँ हैं | " नारी और नर दाल के दो दलों की भाँति हैं "|

"उपनिषदों में इससे भी एक पग आगे बढकर सृष्टि की संपूर्ण रिक्तता की पूर्ति नारी से मानी गई हैं|"

आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक नारी के संदर्भ में लिखा गया हैं | आधुनिक काल में नारी की वास्तव स्थिति को बहुत सी लेखिकाएँ एवं लेखकोंने लिखने की कोशिश की हैं | उसे न्याय देने का समानता की दृष्टी से प्रयत्न किया गया हैं | किंतु वर्तमान में जब नारी को अपना जीवन जीतें देखते हैं तो उसकी समस्या, मजबुरी, यातना, व्यथा अर्थात उसको व्यक्तित्त्व का दोहरापण नजर आता हैं | अंतः आज नारी रसोई बर्तन से बाहर निकलकर विविध क्षेत्रों में अपना स्थान प्रस्तुत कर रहीं हैं, वह कामकाज के लिए घर से बाहर निकलकर अपना अस्तित्त्व निर्माण करने की सफल कोशिश कर रही हैं किंतु ऐसी अवस्था में

भी उसकी समस्याएँ कम नहीं हुई हैं | वह एक ओर घर-गृहस्थी के लिए मर रही है, वहीं दूसरी ओर कामकाज के माध्यमसे अपने परिवार को आर्थिक दृष्टि से संपन्न कर रही है | वह अब आर्थिक दृष्टि से प्रगल्भ हो रही हैं किंतु उसकी समसयाएँ कम होने के बजाय बढ रही है| उसे सामाजिक, पारिवारिक, आर्थिक दृष्टि से तनावग्रस्त, घूटनशील जीवन जीना पड रहा है| ऐसे ही कामकाजी महिलाओं की वेदना, संघर्ष को चित्रित करने का काम अनेक हिंदी महिला कहानीकारोंने किया है | उसका अध्ययन करना आवश्यक है| नारियों के अंतर्गत और बर्हिगत व्यक्तित्त्व को परखने की कोशिश समकालीन हिंदी महिला कहानीकारोंने की हैं, इसलिए समकालीन हिंदी महिला कहानीकारोंने लिखी कहानियों का अध्ययन करना और समाज के सामने नारी की सत्य स्थिति को प्रस्तुत करना यही दृष्टि रही हैं | यह दृष्टि सामने रखकर मैंने अपना शोध कार्य करने का निश्चय किया |

शोध विषय की प्रेरणा और विषय चयन :-

कहानी गद्य साहित्य की सबसे प्रतिष्ठित तथा प्रखर विधा है | कहानी कहना और सुनना मानव की आदिम प्रवृत्ति रही हैं| बच्चों से लेकर बूढों तक सभी को कहानियाँ कहना-सुनना बडा अच्छा लगता है| बाल्यावस्था में दादी-नानी, परियों और राजारानी की कहानियाँ सुनाई जाती थी | उन कहानियों को सुनते हुए मुझे बडा आनंद आता था| स्कूल में भी पाठ्यक्रम में जो कहानियाँ थी उसमें भी मुझे बहुत दिलचस्पी थी| कथा-साहित्य के प्रति मेरी रूची निरंतर बढती ही रही| कहानी कहना पढना, सुनना सभी मुझे बहुत पसंद आता रहा| पाठ्यक्रम के अलावा भी मैंने अनेक मराठी हिंदी कहानियों को रूची से पढा हैं |

स्वामी रामानंद तीर्थ विश्वविद्यालय में जब एम.फिल करने का अवसर मिला तब श्री. रावसाहेब जाधव जी के निर्देशन में "साठोत्तरी हिंदी कहानियों में नारी के विविध रूप" पर शोधकार्य किया| उसी दरमियान समकालीन कहानी साहित्य के अंतर्गत कामकाजी नारी के बारे में सोचकर मेरा ध्यान आकृष्ट किया गया| जब पीएच. डी. के लिए संशोधन का कार्य आरंभ किया तथा हिंदी विभाग प्रमुख डॉ. हणमंत पवार सर के निर्देशन में "समकालीन हिंदी महिला कहानिकारों की कहानियों में कामकाजी नारी" पर शोधकार्य करने का सुअवसर प्राप्त हुआ|

कहानी साहित्य के अंतर्गत समकालीन हिंदी महिला कहानियों की विशेषताएँ चर्चा का केंद्रबिंदु रही| परिणामत: मैं समकलीन हिंदी महिला कहानिकारों की कहानियों में कामकाजी नारी इस विषय की ओर आकृष्ट हो गई|

समकालीन कहानियों में बहुस्पर्शी व्यक्तित्त्व तथा तलस्पर्शिनी दृष्टि के चलते ये समकालीन महिला कहानिकारों की कहानियों की कामकाजी नारी अत्याधिक प्रभावशाली रही | इसी कारण मैंने इन कहानियों को शोध विषय के रूप में चुना| शोध विषय को हिंदी विभाग प्रमुख डॉ. हणमंत पवार सर के सन्मुख रखा| उन्होने शोध विषय के शीर्षक की चर्चा की| फलस्वरूप "समकालीन हिंदी महिला कहानिकारों की कहानियों में कामकाजी नारी" विषय पर शोधकार्य करने की अनुमती प्रदान की| गुरूवर्य सुझाव के अनुसार शोधकार्य के विषय को अंतिम रूप देने का प्रयास किया गया है|

विषय चयन का उद्देश :-

हिंदी कहानी साहित्य में चित्रित कामकाजी नारियों की समस्याओं का अध्ययन कर उनका पर्दा पाश करना | कामकाजी नारी का समाज में क्या स्थान हैं उसके बारे में चर्चा करना | हिंदी कहानी साहित्य में चित्रित कामकाजी नारियों के विभिन्न रूपों का अध्ययन करना, हिंदी कहानी साहित्य में चित्रित पारिवारिक कामकाजी नारियों के जनजीवन का चित्रण करना एवं उनकी पारिवारिक समस्याओं को सामने लाना| हिंदी कहानी में चित्रित कामकाजी नारि का मनौवैज्ञानिक दृष्टि से अध्ययन करना |

अनुसंधान कि पद्धति :-

अनुसंधान का कार्य करते समय अंत: साक्ष्य और बाह्य साक्ष दोनों पद्धतियों का उपयोग करना है| वैश्विकरण से प्रभावित कथा साहित्य के अंतर्गत कहानी में वैश्विकरण के प्रति जो भाव स्थितियाँ प्रस्तुत की हैं| उसे समझकर १९९० के दशक में कहानीकारों ने वैश्विकरण के संबंध में जो मत व्यक्त किए हैं, उनकी समीक्षा करते हुए व्याख्यात्मक अनुसंधान पद्धति, वर्णनात्मक अनुसंधान पद्धति, भावात्मक अनुसंधान पद्धतियों का उपयोग किया जाएगा |

शोधकार्य की रूपरेखा निम्नरूप से की गई है -

शोध प्रबंध की रूपरेखा :-

प्रस्तुत शोध कार्य के विषय-विवेचन की दृष्टि से पाँच अध्यायों में विभाजित किया गया है| अध्याय इस प्रकार है -

†¬µÖÖµÖ - 1 : समकालीन हिंदी महिला कहानी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

†¬µÖÖµÖ - 2 : समकालीन हिंदी महिला कहानी में कामकाजी नारी

†¬µÖÖµÖ - 3 : समकालीन महिला कहानिकारों की कहानी में कामकाजी नारी का पारिवारिक जीवन

†¬µÖÖµÖ - 4 : समकालीन हिंदी महिला कहानिकारों की कहानी में कामकाजी नारी का मनोवैज्ञानिक चित्रण

†¬µÖÖµÖ - 5 : शिल्प विधान

†¬µÖÖµÖ - 1

समकालीन हिंदी महिला कहानी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

- प्रस्तावना

1.1 सामाजिक पृष्ठभूमि

1.2 धार्मिक पृष्ठभूमि

1.3 राजनीतिक पृष्ठभूमि

1.4 सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

1.5 आर्थिक पृष्ठभूमि

1.6 शैक्षिक पृष्ठभूमि

निष्कर्ष

†¬µÖÖµÖ-2

समकालीन हिंदी महिला कहानी में कामकाजी नारी

- प्रस्तावना

2.1 कामकाजी नारी : वर्गीय आधार पर

2.1.1 उच्चवर्गीय कामकाजी नारी

2.1.2 मध्यवर्गीय कामकाजी नारी

2.1.3 निम्नवर्गीय कामकाजी नारी

2.2 वैवाहिकता के आधारपर

2.2.1 अर्थार्जन करनेवाली अविवाहित नारी

2.2.2 अर्थार्जन करनेवाली विवाहित नारी

2.2.3 अर्थार्जन करनेवाली तलाकशुदा नारी

2.2.4 अर्थार्जन करनेवाली विधवा नारी

2.3 व्यावसायिकता के आधार पर

2.3.1 शैक्षिक क्षेत्र से संबंधित नारी

2.3.2 वैद्यकिय क्षेत्र से संबंधित नारी

2.3.3 क्लार्क एवं टायपिस्ट के रूप में नारी

2.3.4 सेक्रेटरी के रूप में नारी

2.3.5 वकील क्षेत्र से संबंधित नारी

2.3.6 अधिकारी के रूप में नारी

2.3.7 वेश्या, कॉलगर्ल तथा रखैल के रूप में नारी

2.3.8 व्यवसाय करनेवाली नारी

2.3.9 अन्य

निष्कर्ष

†¬µÖÖµÖ -3

समकालीन महिला कहानिकारों की कहानी में कामकाजी नारी का पारिवारिक जीवन-

प्रस्तावना -

3.1 कामकाजी माता के रूप में नारी

3.1.1 परंपरागत माता के रूप में नारी

3.1.2 प्रगतिशील माता के रूप में नारी

3.1.3 विद्रोही माता के रूप में नारी

3.2 कामकाजी पत्नी के रूप में नारी

3.2.1 परंपरागत कामकाजी पत्नी के रूप में नारी

3.2.2 प्रगतिशील कामकाजी पत्नी के रूप में नारी

3.2.3 विद्रोही कामकाजी पत्नी के रूप में नारी

3.3 कामकाजी प्रेमिका के रूप में नारी

3.3.1 सहिष्णु प्रेमिका के रूप में नारी

3.3.2 प्रगतिशील प्रेमिका के रूप में नारी

3.3.3 विद्रोही प्रेमिका के रूप में नारी

3.4 पुत्री के रूप में नारी

3.4.1 प्रगतिशील पुत्री के रूप में नारी

3.4.2 विद्रोही पुत्री के रूप में नारी

3.5 बहन के रूप में नारी

3.6 बहू के रूप में नारी

3.7 सास के रूप में नारी

निष्कर्ष

†¬µÖÖµÖ - 4

समकालीन हिंदी महिला कहानिकारों की कहानी में कामकाजी नारी का मनोवैज्ञानिक चित्रण

प्रस्तावना

4.1 तनावग्रस्त कामकाजी नारी

4.2 घूटनशील कामकाजी नारी

4.3 विद्रोही कामकाजी नारी

4.4 दैहिक शोषित कामकाजी नारी

4.5 पुरूष सहकर्मियों से परेशान कामकाजी नारी

4.6 अन्यायविरोधी शोषित कामकाजी नारी

4.7 पति द्वारा शोषित कामकाजी नारी

4.8 आर्थिक विवशताग्रस्त कामकाजी नारी

निष्कर्ष

†¬µÖÖµÖ - 5

शिल्प विधान

5.1 ³ÖÖÂÖÖ

5.2 ×¿Ö»¯Ö

निष्कर्ष एवं मूल्यांकन

* निष्कर्ष

* मूल्यांकन

आधार ग्रंथ

शोध विषय से संबधित कहानीकार -

समकालीन कहानी आंदोलन पर साहित्य विपुल मात्रा में है | समकालीन महिला कहानिकारों की कहानियों का विवरण निम्न प्रकार से है |

1) मन्नु भंडारी की कहानियाँ :-

१) मैं हार गई २) त्रिशंकु (कहानी संग्रह) ३) अकेली घुटन ४) एक प्लेट सैः लाब ५) यही सच है ६) सयानी बुआ ७) स्त्री सुबोधिनी ८) मुक्ति रजनी ९) इसा के घर अन्सान १०) तीन निगाहों की एक तस्वीर ११) दो कलाकार १२) गीत का चुंन १३) जीती बाजी की हार १४) अभिनेता |

2) मृदुला गर्ग की कहानियाँ :-

१) कितने कैंदे २) टुकडा-टुकडा आदमी ३) डैफोडिल जल रहे हैं ४) ग्लेसियर से ५) ऊर्फ सॅम ६) शहर के नाम ७) चर्चित कहानियाँ ८) समागम ९) मेरे देश की मिट्टी अहा १०) संगति विसंगति ११) जूते का जोड गोभी का तोड

3) ´ÖÖ»ÖÝÖß •ÖÖ¿Öß :-

१) वो तेरा घर ये मेरा घर (कहानी संग्रह) २) मोरी रंगदी चुनरिया (कहानी संग्रह) ३) एक और देवदास (कहानी संग्रह) ४) बहुरि अकेला ५) सन्नाटा ६) स्नेहबंध |

4) ÃÖµÖ²ÖÖ»ÖÖ :-

१) इक्कीस कहानियाँ २) पाँच लंबी कहानियाँ ३) गृहप्रवेश ४) भुक्खड की औलाद ५) मानसी ६) मटियाला ७) तितर ८) अनाम लमहों के नाम ९) एक इंद्र धनुष्य १०) दिशाहिन ११) थाली १२) भर चाँद मुंडेर पर १३) गृह-प्रवेश १४) साँझवाती १५) कात्यायनी १६) संवाद १७) सिस्टर प्लीज १८) आप जाना नहीं १९) मानुष अंध २०) वेणु का या घर २१) प्रतिनिधी कहानियाँ - सूर्यबाला की प्रेमकहानियाँ २२) समग्र कहानियाँ आदि |

5) ममता कालिया :-

पाँच कहानी संग्रह - १) छुटकारा २) सीट नम्बर छह २) अब अदद औरत ३) प्रतिदिन ४) उसका यौवन ५) अपत्नी ६) आजादी ७) बडे दिन की पूर्व साँझ ८) बीमारी ९) थोडासा प्रगतिशील १०) निमोही ११) परदेशी १२) पीठ १३) बोलनेवाली औरत १४) मेला १५) कामयाब १६) जरासी रोशनी १७) नयी सदी की पहचान श्रेष्ठ महिला कहानीकार -ममता कालिया |

6) कृष्णा अग्निहोत्री :-

१) टेसु की कहानियाँ

7) ^ÂÖÖ ×¯ÖµÖ¾Ö¤üÖ :-

१) वनवास २) कितना बडा झुठ ३) शून्य ४) जिन्दगी और गुलाब के फुल ५) एक कोई दुसरा ६) मेरी प्रिय कहानियाँ ७) वापसी ८) संपूर्ण कहानियाँ |

8) ¸üÖ•ÖêÛ Ãֽ֚ :-

१) अंधे मोड से आगे २) तीसरी हथेली ३) यात्रा-मुक्त ४) दूसर देश काल में ५) यह कहानी नहीं ६) सदियों से ७) किसका इतिहास ८) गर्मे-हयात ने मारा ९)खाली लिफाफा १०) मार्था का देश ११) यही तक|

9) दिप्ती खंण्डेलवाल :-

१) कडवे सच २) औरत और नाते ३) नारी मन (कहानी संग्रह) ४) मूल्य ५) कगार ६) विषयायी ७) ये दूरियाँ ८) भगवान |

10) ´Ö¡ÖµÖß ¯ÖÂ¯ÖÖ :-

१) ललमनियाँ तथा अन्य कहानियाँ (कहानीसंग्रह) २) प्रिया हठ (कहानीसंग्रह) ३) फैसला ४) सिस्टर सैंध ५) अब फूल नहीं खिलते ६) बोझ ७) पगला गई है भागवती ८) छाँह ९) तुम किसकी हो x²Ö»»Öß|

प्राकल्पना / पूर्वानुमान :-

1) समाज, धर्म, नैतिक, आचार-विचारों के प्रति विद्रोह की अभिव्यक्ति समकालीन कहानी का लक्ष Æü |

2) समकालीन महिला कहानिकारों की कहानी में उच्चवर्गीय, निम्नवर्गीय, मध्यवर्गीय नारी जीवन की कटुताओं और कुण्ठाओं का चित्रण हैं |

3) समकालीन हिंदी महिला कहानी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि की प्रस्तुती |

4) समकालीन हिंदी महिला कहानी में कामकाजी नारी की प्रस्तुती |

5) समकालीन महिला कहानिकारों की कहानी में विभिन्न क्षेत्र की कामकाजी नारी की जीवन प्रस्तुती |

6) समकालीन हिंदी महिला कहानिकारों की कहानी में कामकाजी नारी का मनोवैज्ञानिक चित्रण ¯ÖÃÖÖÖß |

संदर्भ ग्रंथ :-

1) समकालीन रचना का परिदृश्य - रामस्वरूप द्विवेदी, प्रकाशक - प्रतिभा प्रकाशन, १२८/५४३/१२ के ब्लॉक, किदवई नगर |
संस्करण प्रथम २००३

2) समकालीन साहित्य समीक्षा - डॉ. चन्द्रभान रावत, डॉ. रामकुमार खंण्डेलवाल मुद्रक - बंधु प्रिंटींग प्रेस न्यू कालोनी चौपटियाँ, लखनऊ |

3) समकालीन साहित्य एक नई दृष्टि - इन्द्रनाथ मदान |

4) समकालीन हिन्दी कहानियाँ - स्त्री जीवन
लेख - मिथिलेश वामनकर जनवरी १७-२०००८ |
राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, प्र. सं. , १९८४ |

5) दसवे दशक की कहानी-बनवीर प्रसार शर्मा, कृष्णकांत भारद्वाज
अनघ प्रकाशन, दिल्ली |

6) बीसवी सदी की हिंदी कहानी के बदलते परिदृश्य -शोभारानी श्रीवास्तव,
प्रकाशन साहित्य - रत्नालय, कानपूर |

7) मैत्रेयी पुष्पा और मेघना पेठे -अभिव्यक्त नारी - धोंडिबा रामराय घुरे -
जवाहर पुस्तकालय, मथुरा |

8) मेहरूनिसा परवेज के कथा साहित्य में नारी - डॉ. आर. एस. जगताप,
विद्या प्रकाशन, कानपूर |

9) समकालीन हिंदी कहानियों में दलित चेतना - सुमन सिंह
विकास प्रकाशन, कानपूर |

¿ÖÖ¬Ö”ÖÖ¡ÖÖ **शोध निर्देशक**

भताने जयश्री आत्माराम **डॉ. हणमंत पवार**

(अध्यक्ष, हिंदी विभाग)

शहीद भगतसिंग महाविद्यालय, किल्लारी,

ÝÖÖ. †ÖÃÖÖ,×•Ö. »ÖÖÝÖ¸|